ल्यूमेर ब्रदर्स के उन प्रतिनिधियों के सौजन्य से ल्यूमेर सिनेमैटोग्राफ कैमरा खरीदा। ~~चलचित्र~~ के लिए ल्यूमेर सिनेमेटोग्राफ मे तीनों क्रियाएँ अर्थात कैमरा, प्रोसेसिंग और प्रोजेक्टर का एक साथ समावेश होता था। भारतीय चलचित्र निर्माण (चलते फिरते चित्र) में सखाराम भतवडेकर उर्फ सेव दादा का पहला नाम आता है जिन्होंने सन् 1896 मे ल्यूमेर सिनेमैटोग्राफ से एक कुश्ती प्रतियोगिता के कुछ दृश्यों का छायांकन करके लोगों के समक्ष प्रदर्शित किया।

भारत में सिनेमा के आगमन से न सिर्फ मुम्बई में बल्कि कोलकाता और चेन्नई मे भी तहलका मच गया। इन शहरों में रहनेवाले अमीर इस नवीन तकनीक के दीवाने हो गए। लोग ~~आ~~ आसपास के छोटे छोटे दृश्यों का छायांकन कर प्रदर्शित करने लगे। सन् 1897 से लेकर सन् 1912 तक फिल्मांकन किए गए चलचित्र समसामयिक घटनाओं, छोटे मोटे समारोहों की रिकार्डिंग के अतिरिक्त कुछ और नहीं थे। लेकिन फिल्मांकन के इस नए व्यापार से लोगों ने खूब धन और नाम कमाया। ~~कुछ~~ सृजनात्मक विचारधारा का युवावर्ग इसे जीविका के साधन के रूप में अपनाने लगा था। इस दिशा में कई भारतीयों और विदेशियों ने ~~कई~~ मूक लघु चलचित्र प्रदर्शित किए। आज की भाषा में इन चलचित्रों को 'मूक वृतान्चित्र' की श्रेणी में ही रखा जा सकता है। ~~फिर 1912 आते आते भारतीय सिनेमा के मे परिवर्तन की लहर उठने लगी~~ थी। 1895-96 मे ल्यूमेर और मेलिएर ब्रदर्स ने पहली बार एक शॉट में समाप्त होने वाली दो-तीन मिनट की फिल्मों का निर्माण किया।

फिल्म या चलचित्र में तस्वीरों को इस प्रकार ~~से~~ एक के बाद एक प्रदर्शित किया जाता है जिससे गति का आभास होता है। फिल्में अक्सर विडियो कैमरे से रिकॉर्ड करके बनाई जाती है या फिर एनिमेशन विधियों या स्पेशल इफैक्ट्स का प्रयोग करके। सिनेमा में कैमरे की महत्वपूर्ण भूमिका है। कैमरा फिल्म का अभिन्न अंग है। कैमरे की तकनीक में नित नए आविष्कार होते रहे हैं। सबसे पहले मेलिएर ने Single shot वाली फिल्मों का निर्माण किया इसमें कैमरे को एक स्थान पर स्थिर करके shot लिया जाता था।